ग्रामीण विकास विभाग
बिहार सरकार

अन्दर के पृष्ठों में...

संघर्ष ने संवारी जिन्दगी
मिली हौसले को उड़ान
(पृष्ठ – 02)

सतत् जीविकोपार्जन योजना ने
दिखाया जीने की राह
(पृष्ठ – 03)

सतत् जीविकोपार्जन योजना
जिला एवं राज्य स्तरीय गतिविधियां
(पृष्ठ – 04)

सतत् जीविकोपार्जन योजना

एक नई राह

माह – नवम्बर 2022 ।। अंक – 16

सतत् जीविकोपार्जन योजना के लाभार्थियों का बढ़ा आत्मसम्मान

सतत् जीविकोपार्जन योजना बिहार सरकार की एक महत्वकांक्षी परियोजना है। योजना की शुरूआत माननीय मुख्यमंत्री, बिहार द्वारा 05 अगस्त 2018 को किया गया। परियोजना द्वारा वैसे परिवार जो पूर्व में ताड़ी या शराब के व्यवसाय से जुड़े हुए थे एवं समाज की मुख्य धारा में शामिल होने से किसी कारणवश वंचित रह गए थे का वित्तीय पोषण किया जा रहा है। साथ ही साथ क्षमतावर्धन के द्वारा आजीविका संवर्धन के लक्ष्य को लेकर योजना कार्य कर रही है। योजना हेतु लक्षित परिवार अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति एवं अन्य वर्गों के अत्यन्त गरीब परिवार के सदस्य हैं। साथ ही लक्षित परिवारों में वैसे परिवारों को निश्चित रूप से शामिल किया गया है जो पूर्व में ताड़ी, शराब आदि व्यवसाय से जुड़े हुए थे। योजना का कियान्वयन ग्रामीण विकास विभाग, बिहार सरकार के द्वारा जीविका के माध्यम से किया जा रहा है।

योजना की उपलब्धि मुख्य रूप से इसी से समझी जा सकती है कि इसके सफल कियान्वयन हेतु लक्ष्य के विरुद्ध अबतक कुल 1,25,261 परिवारों को योजना से जोड़ा जा चुका है। जीविकोपार्जन एवं आय आधारित गतिविधियों से 93,642 परिवार जुड़ चुके है। चयनित परिवारों में से 94 हजार परिवारों को क्षमता निर्माण एवं उद्यम विकास हेतु प्रशिक्षण दिया जा चुका है। 71 हजार परिवारों को शिक्षा, स्वास्थ्य एवं सरकार की विभिन्न योजनाओं से जुड़ाव तथा 27 हजार परिवारों को पशुपालन विषयक रख–रखाव एवं घरेलु उपचार हेतु प्रशिक्षित किया गया है। जीविका संपोषित ग्राम संगठनों द्वारा लगभग एक लाख चयनित परिवारों को जीविकोपार्जन अंतराल राशि भी उपलब्ध कराई गयी है।

जीविकोपार्जन सूक्ष्म योजना के आधार पर ग्राम संगठनों द्वारा चयनित परिवारों को एकीकृत परिसंपत्ति हस्तांतरित की गयी है एवं इन परिवारों को प्रशिक्षित कर सूक्ष्म व्यवसाय, गव्य, बकरी एवं मुर्गी पालन, मधुमक्खी पालन तथा कृषि से सम्बंधित गतिविधियों से जोड़ा गया है। इन गतिविधियों से जुड़ाव के बाद दीदियों ने अपनी आर्थिक स्थिति को बदलने में सफलता हासिल की है। परियोजना की सफलता को देखते हुए राज्य सरकार ने परियोजना की अवधि का विस्तार वर्ष 2024 तक कर दिया है। योजना द्वारा अपने विस्तारित अवधि तक 2 लाख या सभी योग्य लक्षित परिवारों को कार्यक्रम कियान्वयन के अंतर्गत जोड़कर आजीविका एवं आय की विभिन्न गतिविधियों में सम्मिलित किए जाने का कार्य काफी तेजी से किया जा रहा है। योजना की सफलता एक नए बिहार का निर्माण में अहम भूमिका निभा रही है।

योजना के तहत क्रमिक वृद्धि कार्यनीति (ग्रेजुएशन एप्रोच) अपनाई गयी है जो विश्व बैंक तथा अन्य वैश्विक संस्थाओं द्वारा लगभग 125 से अधिक देशों में गरीबी उन्मूलन कार्यक्रम के क्रियान्वयन हेतु सफलतापूर्वक प्रयोग में लायी जा रही है। योजना के सफल क्रियान्वयन के लिए जीविका द्वारा सामुदायिक संसाधन सेवियों की पहचान एवं उन्हें प्रशिक्षित किया जाता है। जिसके बाद सामुदायिक संसाधन सेवियों के माध्यम से लक्षित परिवारों की पहचान की जाती है। इस प्रक्रिया के बाद लक्षित परिवारों के आजीविका सृजन हेतु ग्राम संगठन के माध्यम से सूक्ष्म–निवेश योजना तैयार करवाया जाता है। जिसके बाद ग्राम संगठन द्वारा लक्षित परिवारों को जीविकोपार्जन अंतराल राशि प्रदान की जाती है। राशि प्रदान करने के बाद लक्षित परिवारों को जीविकोपार्जन निवेश निधि प्रदान किया जाता है। राशि उपलब्धता के बाद उत्पादक संपत्ति का सृजन, खाद्य सुरक्षा उपलब्ध करवाना, बचत के साथ सरकारी योजनाओं तक पहुँच एवं कौशल में वृद्धि कर लाभार्थी दीदियों की आर्थिक प्रगति एवं सामाजिक समावेशन सुनिश्चित किया जाता है।

इस प्रक्रिया के उपरांत लाभार्थी दीदियों को 24 माह में ग्रेजुएट किया जाता है। जिसके तहत लाभार्थी दीदी के उत्पादक संपत्ति में कम से कम 50 प्रतिशत की वृद्धि हो जाती है। इसके साथ ही खाद्य सुरक्षा के तहत दिन में दो शाम पौष्टिक भोजन की उपलब्धता सुनिश्चित हो जाती है। वहीं लाभार्थी दीदियों द्वारा तीन माह में न्यूनतम 250 रूपया की बचत की जाती है। इस प्रकिया के तहत लाभार्थी दीदियों को सरकारी योजनाओं के साथ जुड़ाव किया जाता है, जिसमें प्रधानमंत्री आवास योजना, पेंशन योजना, बैंक में खाता, बीमा, शौचालय आदि प्रमुख हैं। इस पूरी प्रक्रिया में दीदियों के व्यवसायिक कौशल में विकास किया जाता है। इस प्रकार मुख्यधारा से वंचित दीदियों का सामाजिक समावेशन कर उन्हें समाज की मुख्यधारा से जोड़ा जाता है।

संघर्ष ने संवारी रजनी की जिन्दगी

जमुई जिले के प्रखंड लक्ष्मीपुर स्थित मटिया पंचायत के हनुमान चौक निवासी रजनी देवी का जीवन संघर्षों से भरा था। एक समय ऐसा भी था जब दीदी और उनके परिवार को भोजन तक नसीब नहीं हो पाता था। दीदी के पति शराब की भट्टी पर मजदूरी किया करते थे। जीविका एवं सतत् जीविकोपार्जन योजना के संयुक्त प्रयास का परिणाम है कि आज दीदी का परिवार समाज में इज्जत के साथ जीवन व्यतीत कर रहा है।

वर्ष 2016 के अप्रैल में जब राज्य में पूर्ण शराबबंदी हुई थी तो इसका असर दीदी के परिवार पर भी पड़ा था। पति के बेरोजगार एवं बीमार रहने की वजह से घर की आर्थिक स्थिति ख़राब होने लगी थी। आय के अन्य श्रोत नहीं होने के कारण उन्हें दूसरों के घरों से मांगकर खाने को मजबूर होना परता था।

वर्ष 2020 में दीदी की स्थिति को देखते हुए उन्हें सतत् जीविकोपार्जन योजना से जोड़ा गया। बर्तन दुकान के लिए दीदी को राशि मुहैया कराई गई। आज दीदी की मेहनत का ही परिणाम है कि प्रखंड लक्ष्मीपुर में उन्हें बर्तन विक्रेता के रूप में लोग जानने लगे हैं। जिले में एसजेवाई ग्रेजुएशन समारोह के लिए जब सर्वे किया जा रहा था तो सबसे योग्य दीदी के रूप में रजनी दीदी का नाम सामने आया। ग्रेजुएशन एप्रोच (क्रमिक वृद्धि) के मापदंडो के मुताबिक इन दो सालों में दीदी की मासिक आय में तीन गुना की बढ़ोतरी देखी गई। अभी दीदी की कुल संपत्ति करीब दो लाख के करीब है और महीने में उन्हें 12–15 हजार रूपये का मुनाफा हो रहा है। बर्तन बेचने के अलावा दीदी सिलाई के साथ–साथ नाश्ता का दुकान चलाती हैं। नाश्ते की दुकान से भी उन्हें रोजाना 500–700 रूपये का मुनाफा हो जाता है। अपने संघर्ष के दिनों को याद करते हुए दीदी बताती हैं कि – ''कभी बीड़ी बनाकर महीने में 500 तो कभी 1000 रूपये मिलते थे, ऐसे में परिवार चलाना मुश्किल होता था। आज बर्तन कारोबारी के रूप में लोग उन्हें जानते है।'' जीविका ने उनके हौसलों में उड़ान भर दिया है और वह जीवन को बेहतर बनाने की और अग्रसर है।

जीविका का मिला साथ तो आसान हो गयी जिंदगी

सहरसा जिले के सिमरी बख्तियारपुर प्रखंड की रहने वाली अनीता देवी के दुख दर्द भरे जीवन में अब उम्मीद की किरण दिखाई देने लगी है। बीमारी वजह से दीदी के पति कोशी साहनी काम करने मे असमर्थ हो गए थे। और दूसरी तरफ उनके इलाज़ का खर्च ने परिवार को कर्ज मे डुबो दिया। 2018 में दीदी के पति की मृत्यु हो गयी। चार बेटी, एक बेटा, बूढ़ी सास और एक देवर (मानसिक रूप से अस्वस्थ) की सारी जिम्मेदारी अनीता के कंधों पर आ गयी। इतने बड़े परिवार, कमाने वाला एक भी नहीं ऊपर कर्ज का बोझ ने अनीता की समस्या को और ज्यादा बड़ा दिया।

शराबबंदी के बाद बिहार सरकार के द्वारा सतत् जीविकोपार्जन योजना की शुरूआत की गई। सर्वे के दौरान ग्राम संगठन द्वारा अनीता दीदी का चयन किया गया। इसके बाद ग्राम संगठन द्वारा सुक्ष्म नियोजन के माध्यम से अनीता दीदी के क्षमताओं और इच्छाओं का आकलन कर श्रृंगार की सामग्री का दुकान खुलबाया गया। साथ ही दुकान प्रारंभ होने के अगले सात माह तक एक–एक हजार रूपय प्रति माह दिया गया ताकि दुकान से आय होने की स्थिति तक वह अपने परिवार की जरूरतें पुरी कर सके।

जीविका के सहयोग एवं योजना से मिली सहायता से अनीता दीदी के जीवन में बदलाव होने लगा है। वह कड़ी मेहनत से अपनी आजीविका को आगे बढ़ा रही हैं। अब दुकान की परिसंपति बढ़कर 53,824 रूपये हो गई है। दुकान से होने वाली बिक्री से दीदी को हर माह 4 से 5 हजार की रूपये की आमदनी हो जाती है। दुकान से होने वाली आमदनी से उसने एक बकरी खरीदी है। इससे भविष्य मे उसके घर की आमदनी का स्त्रोत बढ़ेगा। उन्होने जीवन सुरक्षा हेतु अपना बीमा भी करवाया है। दीदी के बच्चे अब स्कूल में पढ़ने भी लगे है। दीदी अब परिवार के साथ सम्मानपूर्वक जीवन व्यतीत करने लगी हैं।

गुड़िया देवी का सफर

गुड़िया देवी भोजपुर जिला के सहार प्रखंड के खड़ाव पंचायत में स्थित टांडी गाँव के बथानी टोला की रहने वाली है। गुड़िया देवी की शादी बर्ष 2014 में हुई थी। गुड़िया देवी जब अपने ससुराल आई तो उस समय वहाँ देशी शराब और ताड़ी का व्यवसाय होता था। न चाहते हुए भी ससुराल और पति के दबाव में आकर गुड़िया देवी को इस व्यवसाय से जुड़ना पड़ा। देशी शराब और ताड़ी के व्यवसाय में जुड़े होने की वजह से उनके पति को देसी शराब और ताड़ी के नशे की बुरी लत लग गई जो कि गुड़िया देवी के समझाने के बाद भी नहीं छोड़ पा रहा था। उनके सेहत ख़राब होने के कारण गुड़िया देवी के परिवार की आर्थिक स्थिति ख़राब होने लगी।

16 फरवरी 2021 जीविका के अंतर्गत पूजा महिला ग्राम संगठन के माध्यम से सतत् जीविकोपार्जन में गुड़िया देवी का चयन किया गया। गुड़िया देवी को सूक्ष्म–उद्यम के लिए चुना गया और पूजा महिला ग्राम संगठन के माध्यम से किराना दुकान की स्थापना की गई। यह किराना दुकान दीदी की ज़िन्दगी में आशा की नई किरण बन कर आई। दीदी इस दुकान को पूरी लगनता के साथ चला रही हैं, जिससे वह अपना और अपने परिवार का पालन पोषण बेहतर तरीके से कर पा रही हैं। गुड़िया देवी के पति दुकान चलाने में पूरी मदद कर रहे हैं। उनके पति ने देसी शराब और ताड़ी का व्यवसाय छोड़ दिया है। गुड़िया देवी इस दुकान की मदद से एक भैंस का बच्चा और एक बकरी भी खरीदी है। गुड़िया देवी की मासिक आय अब करीब 4000 से 4500 है। गुड़िया देवी अब सतत् जीविकोपार्जन में ग्रैजुएट दीदी हो गई हैं। गुड़िया देवी अपने दुकान से काफी खुश हैं और अब वह पहले से बेहतर जिंदगी जी रहीं हैं। भविष्य में दीदी अपने दुकान का विस्तार करना चाहती है एवं दूध और बकरी पालन भी करना चाहती है। साथ हीं अपने बच्चों को बेहतर शिक्षा और बेहतर ज़िन्दगी देना चाहती हैं।

सतत् जीविकोपार्जन योजना ने दिखाया जीने की राह

मंजू देवी पश्चिम चंपारण जिला की मझौलिया प्रखंड की रहने वाली है। मंजू का जीवन घर की जिम्मेदारी संभालने और चार बच्चों की परवरिश करने में हंसी खुशी से व्यतीत हो रही थी। दीदी के पति राज मिस्त्री का काम करते थे। वर्ष 2019 में एक रोड एक्सीडेंट में उनके पति की आकस्मिक मृत्यु हो गई। घर की सारी जिम्मेदारी मंजू देवी पर आ गई। मंजू देवी ने कभी सपने मे भी ऐसा नहीं सोचा था कि उनकी जिंदगी मे ऐसा मोड़ भी आएगा। दीदी पर मुसीबत का पहाड़ टूट पड़ा। चार बच्चों का पालन पोषण करने के लिए दीदी मजदूरी का काम करने लगी। लेकिन मजदूरी से इतना नहीं कमा पाती थी जिससे परिवार को अच्छे से चला सकें।

इसी बीच मझौलिया प्रखंड मे जुलाई 2022 मे सतत् जीविकोपार्जन योजना के अंतर्गत सी.आर.पी. दीदी के माध्यम से गृह भ्रमण का कार्य शुरू हुआ। इस दौरान मंजू देवी की पहचान एस. जे. वाई. लाभार्थी के रूप में की गई। मार्च 2021 को ग्राम संगठन द्वारा मंजू देवी को मनिहारी की दुकान खुलवाया गया। पिछले एक वर्ष से दीदी पूर्ण समर्पण के साथ मनिहारी की दुकान चला रही है और अपने रोजगार को बढ़ाने मे लगी है। पिछले एक वर्ष की मेहनत का असर धरातल पर साफ़ देखा जा सकता है। आज दीदी के पास कुल चल और अचल संपत्ति 138265/रुपये की है। दुकान की आमदनी से दीदी ने 10200/ रुपया की बकरी खरीदी है। इसके साथ दीदी ने 800 रुपया की मुर्गी भी ख़रीदा। पिछले तीन माह ने दीदी ने जीविकोपार्जन गतिविधि से 5608/– रुपया 7324/– रुपया 4346/– रुपया आमदनी दर्ज की है। घर की आमदनी बढ़ने से वो अपने बच्चों को संतुलित आहार दे पा रही है और बच्चों की पढाई पर ध्यान दे रही हैं। साथ ही साथ दीदी ने घर भी बनाना शुरू कर दिया है ताकि और भी बेहतर तरीके से जीवन जी सके। मंजु देवी के संघर्ष और सफलता कि दास्तान दूसरी दीदी दीदियों के लिए प्रेरणा बन रही है।

सतत् जीविकोपार्जन योजना
जिला एवं राज्य स्तरीय गतिविधियां

जिला नोडल का दो दिवसीय आवासीय प्रशिक्षण

सतत् जीविकोपार्जन योजना अंतर्गत दिनांक 17 एवं 18 अक्टूबर 2022 को नव चयनित जिला नोडलों का दो दिवसीय आवासीय प्रशिक्षण का आयोजन होटल चॉक्लेट इन्न में किया गया। प्रशिक्षण में विभिन्न जिलों से आए नए जिला नोडलों को सतत् जीविकोपार्जन योजना, उद्देश्य, क्रमिक वृद्धि कार्यनीति, लक्षित परिवारों का चयन प्रक्रिया, योजना अंतर्गत विभिन्न निधि, जीविकोपार्जन की माँग हेतु सूक्ष्म नियोजन प्रक्रिया, योजना अंतर्गत निर्धारित जीविकोपार्जन गतिविधियाँ, बकरी एवं गव्य पालन एवं उसके रख–रखाव, एस.जे.वाई. अंतर्गत लिखी जाने वाली लेखांकन की पुस्तिका एवं एस.जे.वाई. अंतर्गत एमआईएस का महत्व एवं उपयोग विषयों की जानकारी दी गयी।

मास्टर संसाधन सेवियों का प्रशिक्षण

सतत् जीविकोपार्जन योजना अंतर्गत चयनित मास्टर संसाधन सेवियों का विभिन्न प्रशिक्षण मॉड्यूल पर कुल 14 बैच प्रशिक्षण का आयोजन अक्टूबर 2022 माह में संपादित किया गया। इन प्रशिक्षणों में राज्य के विभिन्न जिलों से कुल 291 एम.आर.पी. को प्रशिक्षित किया गया। प्रशिक्षण में एम.आर.पी. को सतत् जीविकोपार्जन योजना, सूक्ष्म नियोजन प्रक्रिया, एसजेवाई अंतर्गत रिपोर्ट को एम.आई.एस. में प्रविष्टि, सूक्ष्म रोजगार विकास एवं प्रबंधन के सामान्य नियम, व्यवसाय में जोखिम प्रबंधन, व्यवसाय विविधीकरण, बकरी पालन, गव्य पालन, एस.जे.वाई. अंतर्गत लिखी जाने वाली लेखांकन पुस्तिका संबन्धित जानकारी दी गयी।

जीविका दीदियों के साथ संवाद कार्यक्रम

मद्य निषेध, उत्पाद एवं निबंधन विभाग द्वारा दिनांक 26 अक्टूबर 2022 को जीविका स्वयं सहायता समूहों एवं सतत् जीविकोपार्जन योजना की दीदियों के साथ अधिवेशन भवन सभागार, पटना में संवाद कार्यक्रम का आयोजन किया गया। संवाद कार्यक्रम में जीविका के मुख्य कार्यपालक पदाधिकारी ने जीविका दीदियों से संवाद स्थापित करते हुए उनके अनुभवों को जाना। कार्यक्रम में मद्य निषेध प्रहरी के बारे में भी बिस्तार से बताया गया

जीविका, बिहार ग्रामीण जीविकोपार्जन प्रोत्साहन समिति, विद्युत भवन – 2, बेली रोड, पटना – 800021, वेबसाइट : www.brlps.in

संपादकीय टीम
- श्रीमती महुआ राय चौधरी –कार्यक्रम समन्वयक (जी.के.एम.)
- श्री अजीत रंजन, राज्य परियोजना प्रबंधक (अनुश्रवण एवं मूल्यांकन)
- श्री पवन कुमार प्रियदर्शी –परियोजना प्रबंधक (संचार)
- श्री रतिस मोहन –परियोजना प्रबंधक (सामाजिक सुरक्षा)

संकलन टीम
- श्री बिप्लव सरकार – प्रबंधक संचार
- श्री राजीव रंजन – प्रबंधक संचार, समस्तीपुर
- श्री राजीव रंजन – प्रबंधक संचार, पूर्णिया
- श्री विकास कुमार राव – प्रबंधक संचार, सुपौल